एम. ए (संस्कृत) द्वितीय सेमेस्टर

CC – IX. (उत्तररामचरित)

• उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते।

By
Dr. Sanjay Kumar chaubey
(Assistant professor)
Dept. of Sanskrit
H.D. Jain college, Ara

Scanned by CamScanner

Date: / /

(उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते)

संस्कृत नाट्य के क्षेत्र में अन्यतम स्थान प्राप्त महाकवि भवभूति को कतिपय आलोचकों ने कालिदास से भी उच्चकोटिक स्वीकार किया है —

कथ्य ः कालिदासाद्याः भवभूतिर्महाकविः।

इनकी सर्वोत्कृष्ट कृति उत्तररामचरित की सार्थकता घटना संयोजन में, सौष्ठव वर्णनों की सार्थकता चरित्र चित्रण की वैयक्तिकता कथोपकथन में स्वाभाविकता, सरस मनोहर शैली तथा कवित्व और रसपरिपाक आदि कुछ ऐसी विशेषताएं हैं जो महाकवि भवभूति को संस्कृत साहित्य का श्रेष्ठतम नाटककार सिद्ध करती हैं।

कथावस्तु ः-

रामायण के उत्तरकाण्ड की कथा पर आधृत उत्तर-रामचरित में घटनाएँ इस प्रकार विन्यस्त की गई हैं कि वे परस्पर समन्वित प्रतीत होती हैं। उदाहरणार्थः— यदि प्रथम अङ्क के चित्रदर्शन को हटा दिया जाय तो सप्तम अङ्क की घटनायें अस्पष्ट एवं दुर्बोध हो जायेंगी। कथानक रामायण से गृहीत होने पर भी दृश्य एवं वातावरण स्वाभाविक तथा घरेलू प्रतीत होते हैं। रामायण के दुःखान्तक कथानक को अपनी अपूर्व प्रतिभा द्वारा कवि ने सप्तम अङ्क में अद्भुत रस संयोग कर सुखान्त बना दिया है।

चरित्र चित्रणः-

पात्रों के चरित्र चित्रण में असाधारण पटु भवभूति की लेखनी तूलिका से चित्रित उत्तररामचरित के समस्त पात्र जीवन्त हो उठे हैं। इनके राम जैसा आदर्श राजा अन्य किसी नाट्य में उपलब्ध नहीं होता जो अपने प्रजानुरञ्जन व्रत के लिये अपने समस्त सुख स्नेह, दया और प्राणप्रिया पत्नी को भी त्याग दे। और अपने दुःख को प्रकट न होने दे —

स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा।।

और इनकी करुणस्य मूर्तिः, अथवा शरीरिणी विरहव्यथा सीता अपने लोकोत्तर तेज

Page :
Date: / /

से नाटक के प्रत्येक क्षेत्र को आभासित कर रही है।

कथोपकथन:—

सहज, सुन्दर और रसनिष्पत्ति में विशेष सहायक संवादयोजना में निपुण, भवभूति के अत्यन्त लघुवाक्य कभी-कभी गम्भीर अर्थों को अभिव्यक्त कर देते हैं, जैसे सीता का- वत्स! इयमपरा का? पूछना और लक्ष्मण का- "दृश्यतां द्रष्टव्यमेतत्" यह कहना तथा वनदेवता का "हन्त तर्हि पण्डितः संसारः।" कहना सारगर्भित कथोपकथन के उदाहरण हैं। श्लोकों को विभक्त कर संवादोपयोगी रूप देना इनकी विशेषता है।

भाषा शैली:—

गौडी रीति के सम्राट् होने पर भी वैदर्भी के उपासक भवभूति भाषा और भाव का अद्भुत सामञ्जस्य प्रदर्शित करते हुये कोमल प्रसङ्गों में "वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।" जैसी असमस्त और सरल रचना करते हैं तो वहीं कठोर दृश्यों के वर्णन में —

ज्याजिह्वया वलयितोत्कटकोटिदंष्ट्र-
मुद्भूरिघोरघनघर्घरघोषमेतत्।
ग्रासप्रसक्तहसदन्तकवक्त्रयन्त्र-
जृम्भाविडम्बि विकटोदरमस्तु चापम्।।

जैसे समास संकुल ओजोगुण विशिष्ट विकट बन्ध वाले पद्य भी लिखते हैं।

प्रकृति चित्रण:—

भवभूति ने प्रकृति के सुकुमार और भयावह दोनों प्रकारों का आकर्षक चित्रण किया है। प्रकृति के उग्ररूप का चित्र द्रष्टव्य है—

निष्कूजस्तिमिता: क्वचित्क्वचिदपि प्रोच्चण्डसत्त्वस्वना:
स्वेच्छासुप्तगभीरभोगभुजगश्वासप्रदीप्ताग्नय:।
सीमान: प्रदरोदरेषु विरलस्वल्पाम्भसो यास्वयं
तृष्यद्भिः प्रतिसूर्यकैरजगरस्वेदद्रव: पीयते।।

प्रणयचित्र:—

भवभूति ने स्त्री-पुरुष के रोम-रोम में समाविष्ट होने वाले आत्मिक एवं अहैतुक प्रणय का चित्रण किया है —

Page :
Date: / /

व्यतिषजति पदार्थान्तरः कोऽपि हेतु ... संश्रयन्ते ॥

उनका दाम्पत्य प्रेम उज्ज्वल मधुर पवित्र तथा परिवर्तनशील है —

अद्वैतं सुखदुःखयोरनुगतं सर्वास्ववस्थासु य-
द्विश्रामो हृदयस्य यत्र जरसा यस्मिन्नहार्यो रसः।
कालेनावरणात्ययात्परिणते यत्प्रेमसारे स्थितं
भद्रं तस्य सुमानुषस्य कथमप्येकं हि तत्प्राप्यते ॥

भवभूति का करुणः —

करुण के सम्यक् परिस्थायक भवभूति का करुण रस अपने मन्द उत्ताप से दर्शक के हृदय को निरन्तर व्यथित बनाये रखता है :—

अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः।
पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः ॥

राम सीतादि पात्र नहीं अपितु करुणा के साक्षात् प्रतिमूर्ति हैं।

समीक्षा (उपसंहार) —

उत्तररामचरित की सबसे बड़ी विशेषता है एक आदर्श, बहुचर्चित, एवं सम्मानित पुरुष के प्रसिद्ध चरित्र की रक्षा करते हुये उसे मानवीय धरातल पर प्रतिष्ठित करना और भवभूति इसमें सुतरां सफल हुये हैं। राम सीता आदर्श पात्र के साथ-साथ मानवीय स्तर के प्रेमी तथा विरही हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि कथावस्तु के अद्भुत विन्यास, भावों के सूक्ष्म परीक्षण में, आदर्श दाम्पत्य वर्णन में, भवभूति का कोई विकल्प नहीं है।

Scanned by CamScanner